Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - II (Hons)
Paper - IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

GRB BOOKS

1

Berkeley: "Subjective Idealism"
(बर्कले : आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद)

Notes

बर्कले भी लॉक के समान अनुभववादी दार्शनिक थे। किन्तु लॉक का इन्द्रियानुभववाद बर्कले के दर्शन में विज्ञानानुभववाद बन गया है। बर्कले का मुख्य उद्देश्य जड़वाद का खण्डन और विज्ञानवाद का मण्डन करना था।

बर्कले के अनुसार अनुभव ही ज्ञान का एकमात्र साधन है और अनुभव हमें सिर्फ प्रत्ययों का होता है, इसलिए प्रत्यय ही वास्तविक हैं, इनसे भिन्न कोई वास्तविक नहीं है विश्व के सभी पदार्थ अनुभवों या प्रत्ययों का समूह है और अनुभवों या प्रत्ययों का अस्तित्व अनुभवकर्ता पर आश्रित है। इस तथ्य को बर्कले ने अपनी प्रसिद्ध उक्ति Esse est Percipi द्वारा व्यक्त किया है, जिसका अर्थ होता है कि विश्व के सभी पदार्थ अपने अस्तित्व के लिए किसी अनुभवकर्ता पर निर्भर करते हैं।

बर्कले का कहना है कि कोई भी पदार्थ अनुभव से परे नहीं है और अनुभव सिर्फ गुणों का होता है, गुणों के अतिरिक्त किसी गुणाधार द्रव्य या आश्रय का नहीं। इसलिए सभी पदार्थ गुणों के समूह मात्र हैं। किसी भी पदार्थ में गुणों के अतिरिक्त हम कुछ भी नहीं पाते, जैसे-

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes!
GRB BOOKS

मान लो कि एक पुष्प है तो पुष्प कहने से हमें पुष्प का अनुभव नहीं होता बल्कि उसके गुणों जैसे सुगन्ध रंग चिकनाहट आदि का ही अनुभव होता है। पुष्प अपने आप में कोई भौतिक पदार्थ नहीं है वह सिर्फ गुणों का संकलन है। किन्तु गुण वस्तुनिष्ठ मन के बाहर या मन से स्वतन्त्र नहीं बल्कि आत्मनिष्ठ, आत्मा के अनुभव पर आश्रित अर्थात् मन के प्रत्यय हैं। चीनी में चखने के अनुभव पर मीठापन, छूने पर ठण्डापन तथा छूने पर खुरदरापन निर्भर है, इन अनुभवों को अलग करके उनका कोई अर्थ नहीं होता है। इसप्रकार सभी गुण आत्मा पर आश्रित या प्रत्यय है।

परन्तु प्रत्यय निष्क्रिय है और इसलिए संवेदित प्रत्ययों को छोड़कर कुछ और सत्ता है जो प्रत्यय प्राप्त करता है पर जो स्वयं प्रत्यय नहीं है। यह है आत्मा। वस्तुओं की सत्ता उनके सम्बन्ध के प्रत्ययों में निहित है, पर आत्मा की सत्ता Percipi में न होकर Perceiving क्रिया percepter में है। अर्थात आत्मा की सत्ता इसकी सक्रियता में है। अर्थात आत्मा की सत्ता इसकी सक्रियता में है। बर्कले का कहना है कि आत्मा ही एक पदार्थ है और प्रत्यय इसपर निर्भर करते हैं। इसलिए आत्मा और

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

आत्मिक प्रत्यय के अतिरिक्त किसी अन्य चीजों की सत्ता नहीं है। इसलिए बर्कले के दर्शन को आध्यात्मवाद कहते है।

बर्कले को आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी भी कहा जाता है। बर्कले अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी थे लेकिन उत्तरार्द्ध में जाकर वे वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवादी बन जाते है। बर्कले के अनुसार आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद (Subjective Idealism) वह तत्व-शास्त्रीय सिद्धान्त है, जो ससीम आत्मा तथा उनके प्रत्यय को परमार्थ मानता है उनके पर या उनसे भिन्न कोई वास्तविकता नहीं है। इसे आत्मनिष्ठ इसलिए कहा गया कि यह वस्तुनिष्ठ आत्मा में विश्वास नहीं करे।

चूँकि विचारो का अस्तित्व विचार करनेवाले पर निर्भर है और विचार करनेवाला आत्मा होता है अतः समूचा संसार आत्मा पर निर्भर है। आत्मा का प्रत्यय हमें नहीं मिलता लेकिन उसका ज्ञान एक विशेष प्रकार के अनुभव द्वारा होता है जिसे बर्कले आंतरिक अनुभव या अन्तर्बोध कहते है। यह किसी प्रकार का ऐन्द्रिय अनुभव नहीं है। आत्मा को बर्कले चेतन, अनुभव का अधिष्ठान और प्रत्ययों का आश्रय या आधार मानते है। अतः वे आध्यात्मिक द्रव्य भी कहते है।

इसप्रकार आत्मा प्रत्यय या प्रत्ययों का संघात

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

GRB BOOKS

नहीं बल्कि उनका आश्रयभूत द्रव्य है जिसके बिना प्रत्ययों की कल्पना नहीं की जा सकती। अतः आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी बर्कले का निष्कर्ष है कि केवल हमारे आत्मा और उनके प्रत्यय परमार्थ हैं।

बर्कले द्वारा प्रतिपादित आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद का प्रभाव बड़ा क्रांतिकारी सिद्ध हुआ साधारण जनता तथा दर्शन के अधिकांश विद्वानों ने इसका तीव्र विरोध किया। क्योंकि सारे संसार को प्रत्ययों का समूह मानने में बड़ी कठिनाई होती है जो अनेक हैं —

(1) बर्कले सम्पूर्ण विश्व को प्रत्ययों का समूह मानते हैं किन्तु यहाँ पर प्रश्न उठता है कि जब सब कुछ प्रत्यय रूप है तब तो हमलोग प्रत्यय खाते हैं, प्रत्यय पीते हैं प्रत्यय पहनते हैं। यह बहुत बेढंगा सा लगता है।

(2) बर्कले सभी पदार्थों को आत्माओं पर आश्रित मानते हैं किन्तु सभी पदार्थों को ससीम आत्माओं पर मानना उचित नहीं है। जैसे — मान लिया जाय कि मैं रेल की लाइन पर खड़ी हूँ। और देख रही हूँ कि सामने से तेज रेलगाड़ी आ रही है। बर्कले के अनुसार यह प्रत्ययों का समूह है और अनुभव पर आश्रित है तो क्या मेरी आँख बन्द हो जाने पर अनुभव

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

5

के अभाव में उसकी मृत्यु हो जाएगी? इसका उत्तर बर्कले आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के आधार पर नहीं दे पाते हैं।

अतः बर्कले का आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद एक दोषपूर्ण सिद्धान्त है। बर्कले ने स्वयं भी आगे चलकर अपने मत की दुर्बलताओं को महसूस किया है, इसलिए अपने दार्शनिक जीवन के उत्तरार्ध में वे इन दोषों से बचने के लिए God को भी मान लेते हैं और वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवादी बन जाते हैं। चूंकि बर्कले अन्ततः आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद का समर्थन नहीं करते हैं इसलिए शुद्ध रूप से उन्हें हम आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी नहीं कह सकते हैं।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS